मरुस्थल में जैसे बूंदें पावस की...

वर्तमान के वर्धमान कहे जाने वाले, सबसे बड़े संत, चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का इन्दौर आगमन कुछ ऐसा ही था। पूरे बीस वर्षों के सूखे मरुस्थल में जैसे पावस की बूंदे बरस पड़ी हो। सिद्धवरकूट से विहार के पश्चात बड़वाह से जैसे ही अपने 31 शिष्यों के साथ गुरुदेव के चरण इन्दौर की ओर उन्मुख हुए, पूरे इन्दौरवासियों में उल्लास की लहर दौड़ गई। लगा जैसे भक्तों की आराधना भगवान ने सुन ली हो। प्रतिदिन इन्दौर से भक्तों के जत्थे के जत्थे विहार के लिए उमड़ पड़े। पूरे रास्ते भर कड़ाके की ठंड और सर्द हवाओं से बचाने के लिए भक्त अपने भगवान को प्लास्टिक के टेंट में आश्रय देते रहे। गुरुदेव भी अपनी अस्वस्थता के बावजूद रुके नहीं।

शनैः शनैः वह शुभ दिन और शुभ घड़ी भी आ गई जब गुरुदेव के पावन चरण इन्दौर की सीमा में पड़े। 5 जनवरी, रविवार को गुरुवर बिंजालिया फार्म हाउस से बायपास होते हुए उदय नगर मंदिर के लिए जब निकले, तो पूरा इन्दौर उनकी भव्य अगवानी के लिए जन सैलाब के रुप में सड़कों पर आ गया। समस्त जैन समाज, सामाजिक संगठन, अनेक महिला मंडल, सोशल ग्रुप और विभिन्न कॉलोनियों के जिनालयों के पदाधिकारीगण, अनेक राजनीतिक नेतागण अपनी अपनी विशिष्ट वेशभूषा में और विशिष्ट प्रस्तुतियों के साथ अगवानी मार्ग पर जगह जगह मंचासीन थे। कोई महिलाएं अपने सिर पर सुंदर कलश लेकर खड़ी थी, तो कोई हाथों में गुरुदेव के संदेश लिखी हुई तख्तियाँ लिए थी। कोई मंगल आरती के लिए दीपों की थालियां सजाकर खड़ी थी, तो कई महिला मंडल बैंड की धुन से गुरुवर की अगवानी कर रहे थे। नगर की सीमा से लेकर पूरे रास्ते को रंगोली से सजाया गया। ऊपर आकाश से ड्रोन द्वारा पुष्पवृष्टि हो रही थी। कदम कदम पर तोरण द्वार लगाए गये। जिनागम के पचरंगे ध्वज जगह जगह लहरा रहे थे। सबसे आगे बड़नगर का बैंड था। अनेक बैंड और शहनाई वादक स्वागत गीतों से पूरे वातावरण को उल्लासमय बना रहे थे। गुरुदेव के स्वागत के लिए अजमेर से स्वर्ण रथ मंगाया गया था जिस पर श्रीजी विराजमान थे। फार्म हाउस से जैसे ही गुरुवर बाहर आये जनसमूह का उल्लास सारी सीमाएं तोड़कर बेकाबू हो गया। इतने वर्षों से 'गुरुवर हमको तारो, इन्दौर पधारों' की गुहार लगाने वाले 'देखो देखो कौन आये, भक्तों के भगवान आये' के नारो से आसमान को गूंजाने लगे। जनता की भीड़ कदम दर कदम बढ़ती ही जा रही थी। क्या बच्चे, क्या जवान और क्या बूढ़े, क्या बीमार, हर कोई गुरुदेव की एक झलक पाने को लालायित था। एक बार दर्शन करने वाले बार बार उन्हें निहारना चाह रहे थे। किसने कितनी बार गुरुदेव के दर्शन किये, यही सबकी चर्चा का मुख्य विषय था। करीब 4 किलोमीटर के विहार में जगह जगह आचार्यश्री को स्वागतातुर धर्मावलंबियों ने रोका। किसी ने गुरुवर के चरण पखारे, तो किसी ने आरती उतारी। गुरुदेव ने भी सबको दिल खोलकर आशीर्वाद दिया। गुरुवर की अगवानी करने में जैनों के अलावा जैनेतर समाज के प्रतिनिधि भी उत्साहित दिखाई दिये। उदय नगर मंदिर पहुंचकर गुरुदेव ने भगवान चन्द्रप्रभु के दर्शन किये और फिर उपस्थित जनसमूह को आशीर्वाद दिया। अपने आर्शीवचन में उन्होंने अपने बीस वर्षों तक इन्दौर न आने का कारण भी बता दिया। बीस वर्ष पूर्व नगर के पास रेवती रेंज में प्रस्तावित प्रतिभा स्थली की वृहद योजना को कार्यरुप न देने से गुरुवर नाखुश थे। आज वह प्रायोजना तेजी से निर्माण को प्राप्त हो रही है। वर्तमान में वहां जैन छात्राओं के लिए प्रतिभा स्थली के निर्माण के साथ ही सहस्त्र कूट जिनालय, गौशाला, संत निवास और अतिथि निवास का निर्माण कार्य द्रुत गति से चल रहा है।

गुरुदेव की पहली आहारचर्या का सौभाग्य प्रतिभास्थली की बहनों और छात्राओं को मिला। चौका लगाने और मुनि महाराजों को आहार देने के लिए भी श्रावकों का उत्साह चरम पर है। प्रतिदिन 250-300 चौके लगाये जा रहे हैं। नवधा भक्ति से अपने गुरु का पड़गाहन कर आहार देने का सौभाग्य पा रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः गुरुदेव का पाद प्रक्षालन, पूजन, प्रवचन और आहारचर्या देखने के लिए दूर दूर से श्रद्धालू आ रहे हैं। आहार के पश्चात गुरुदेव के दर्शन और आशीर्वाद पाने भक्त घंटों प्रतीक्षा करते हैं। शाम को गुरुभक्ति उपरांत भी आचार्य श्री सबको दर्शन और आशीर्वाद से कृतार्थ कर रहे है। उनके प्रवचनों का मुख्य विषय शाकाहार, इंडिया बने भारत, शिक्षा में हिन्दी भाषा को माध्यम बनाने, बच्चों को संस्कारी बनाने, हथकरघा जैसी योजनाओं से सबको स्वावलंबी बनाने, अहिंसक उत्पादों का उपयोग बढ़ाने जैसे ज्वलंत मुद्दों पर आधारित होते हैं।

प्रतिदिन दोपहर में गुरुदेव विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तियों से मुलाकात करते हैं। इनमें राजनेता, शिक्षाविद्, सामाजिक कार्यकर्ता, विभिन्न संप्रदाय के विशिष्ट पदाधिकारीगण होते हैं। गुरुदेव इनसे सामयिक मुद्दों पर विचार विमर्श करते है।

वर्तमान में आचार्य श्री ससंघ नगर के विभिन्न क्षेत्रों के जिन मंदिरों की वंदना हेतु नगर भ्रमण कर रहे हैं। हर क्षेत्र में गुरुवर के दर्शन, प्रवचन और आहारचर्या के लिए समाजजन उत्साहित होकर पुण्यार्जन कर रहे हैं। गुरुवर भी बरसों से प्यासे भक्तों को उदारता से तृप्त कर रहे हैं।

- अनुपमा जैन, इन्दौर

पंचकल्याणक में शिखरजी ड्रीम्स की मूर्तियाँ भी अभिमंत्रित हुई

रेशू जैन, इन्दौर। इन्दौर महानगर का दिनों दिन विस्तार हो रहा है। सुदूरवर्ती क्षेत्रों में नई कालोनियां बन रही है। विजय नगर से देवास की ओर तलावली चांदा स्थित शिखरजी ड्रीम्स में भी एक नवीन मंदिर का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। यहां कई जैन परिवार निवासरत है। इस मंदिर के निर्माण में सर्वाधिक प्रयास स्व. श्री नरेन्द्रकुमारजी एवं श्रीमती चंदा जैन साइकिल वालो के पुत्र निशांत जैन का रहा है। इनके अथक प्रयासों से आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस आवासीय परिसर में श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान का जिनालय बन गया है। 105 ऐलक श्री निःशंक सागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद और प्रेरणा से भव्य जैन मंदिर का निर्माण हुआ है। आचार्यश्री के सान्निध्य में हुए भव्य पंचकल्याणक महोत्सव में इस मंदिर की प्रतिमाएँ भी अभिमंत्रित हुई है। मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा चिदेश सुपुत्र निशांत-रेशू जैन के द्वारा विराजित की गयी है। 63 इंच की यह अनुपम प्रतिमा बिजौलिया पत्थर से निर्मित हो पद्मासन मुद्रा में है। मुख्य वेदी पर मूलनायक भगवान के साथ वियतनाम मार्बल से निर्मित 29 इंच ऊंची 1008 श्री पद्मप्रभु भगवान की प्रतिमा श्री निर्मलकुमार (एलआईसी) एवं श्रीमती सुनीता जैन, सिवनी वालों ने व 1008 श्री आदिनाथ भगवान की अष्टधातु की मूर्ति श्री कमलेश-नमिता जैन, ढाणे, मुंबई द्वारा विराजमान की गयी है। इसके अतिरिक्त आनंद-राजकुमारी जैन महालक्ष्मी नगर द्वारा भगवान वासुपूज्य की प्रतिमा व श्री आशीष-रुचि जैन ने भगवान मल्लिनाथ जी की प्रतिमा विराजमान कराई है।

मंदिर में संत निवास, पूजन, अभिषेक के जल हेतु कुएँ का निर्माण भी किया गया है। मंदिर की सुचारु व्यवस्था के लिए ट्रस्ट का निर्माण कर संचालन किया जा रहा है। यह मंदिर भी गोलालारीय समाज से जुड़ा होकर इस मंदिर के कई ट्रस्टी गोलालारीय समाज के सदस्य है। ट्रस्ट का उद्देश्य मंदिरजी की देखरेख के अलावा निर्धन परिवारों की शिक्षा व चिकित्सा सहायता में सहयोग करने का है। जो भी समाजजन इस भावना से जुड़ना चाहते है उन्हें हम सादर आमंत्रित करते है। मंदिरजी का निर्माण व व्यवस्थाओं में उदासीन आश्रम के बा.ब्र. श्री अभय भैया 'आदित्य' एवं अनिल भैयाजी का विशेष मार्गदर्शन एवं योगदान निरंतर मिलता रहा है। इस मंदिर को देखने के पश्चात अनेक जैन परिवार यहां बसने को उत्साहित है

आचार्यश्री के मुखारबिंद से....

अभिषेक, पूजन और दर्शन करें - विद्यासागरजी

पंचकल्याणक का काम हो गया है। अब आपकी जवाबदारी है मंदिर में हर दिन स्वयं को तो जाना है और अपने बच्चों को भी लाना है। बच्चों को ऐसे संस्कार दो कि वो हर दिन मंदिर में अभिषेक, पूजा और दर्शन करें। यह बात आचार्य श्री विद्यासागरजी ने खातीवाला टैंक स्थित मंदिर परिसर में प्रवचन के दौरान कही।

अतीत में कुछ भी हो इससे कोई मतलब नहीं, वर्तमान को देखो, इसमें हमारे पास क्या नहीं - विद्यासागरजी महाराज

अतीत में कुछ भी हुआ हो इससे कोई मतलब नहीं, अनागत में क्या होने वाला है चिंता क्यों करते हो। वर्तमान को देखो। वर्तमान में हमारे पास क्या नहीं है। 84 लाख योनियों में मनुष्य योनी बहुत महत्वपूर्ण है और लोगों को प्राप्त है। हम, आपने जितना किया है उतना ही तो मिलेगा। तराजू में जो डालोगे उसमें ऊपर की तरफ अपने आप ही पता चलेगा कि हमारा तौल इतना है, हमारा मोल इतना है। हमारी दृष्टि अपने कर्म व कर्म के उदय और आत्म तत्व की ओर हो जाए तो हाय हाय समाप्त हो जाएगी। प्रसन्न मुद्रा है तो, प्रसन्न मन भी होना चाहिए। प्रसन्न बाहर से नहीं, भीतर से होता है। यह बात आचार्यश्री ने तिलक नगर में धर्मसभा में कही।